'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ७१ } वाराणसी, मंगलवार १६ जून, १९५९ { पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

बिलावर (कश्मीर) २८-५-'५९

ग्राम-स्वराज्य से ही जम्मू-कश्मीर आदर्श राज्य बनेगा

हमारे देश को आजादी हासिल हुई है, लेकिन अभी सच्ची आजादी हासिल करना बाकी है। अंग्रेजों की और राजा-महाराजाओं की हुकूमत गयी, इसलिए सियासी आजादी हासिल हुई। लेकिन सियासी आजादी कम-से-कम आजादी है। उतनी आजादी से इन्सान तरक्की नहीं कर सकता। इन्सान तभी तरक्की कर सकता है, जब माली, इत्तहादी, सामाजिक आजादी भी हासिल हो और इन्सान का दिल भी आजाद हो। कल हमने स्कूल की दीवाल पर लिखा हुआ एक जुमला पढ़ा : 'तन्दुरुस्ती हजार नियामत है।' वह बात बिलकुल ठीक है, लेकिन हम कहना चाहते हैं कि 'आजादी लाख नियामत है।' वह है, दिल की आजादी। लेकिन दिल की यह आजादी तभी महसूस होती है, जब इन्सान अपने पर जब्त रखता है। जब वह अपने मन, इन्द्रियों और बुद्धि पर काबू रखता है, तभी अन्दर की आजादी हासिल होती है।

मन पर काबू रखकर स्वावलम्बी बनें

बाहरी आजादी के लिए यह जरूरी है कि हम जिस जगह रहते हैं, वहाँ हमारा जीवन मिला-जुला हो, हम आपस में एक-दूसरे पर प्यार करते हों। फिर किसी तीसरे की हुकूमत हम पर नहीं चलेगी। लेकिन अगर हम आपस में लड़ते-झगड़ते हैं तो सरकार का कानून आ बैठता है और हमारी आजादी में पाबन्दी आ जाती है। गाँव-गाँव के लोग मिल-जुलकर रहें, अपना कारोबार खुद सम्हाल लें, प्यार से गाँव का एक परिवार बनायें, तभी वह असली आजादी कही जायगी। फिर गाँव को सरकार की मदद तो मिलेगी, लेकिन दखल सरकार का न होगा। जगह-जगह सरकार का कानून चले, प्रजा के बोझ का सारा जिम्मा सरकार पर आये, लोग आपस में लड़ते-झगड़ते रहें और उनके झगड़ों को मिटाकर अमन कायम करने की सारी जिम्मेदारी भी सरकार पर ही आये तो वह सच्ची आजादी नहीं है।

सच्ची आजादी कब ?

सच्ची आजादी तभी आयेगी, जब १. हम अपने मन, इन्द्रियों और बुद्धि पर काबू रखना सीखेंगे। २. गाँव का एक परिवार बना कर रहेंगे, जमीन की मालकियत मिटायेंगे, गाँव का स्वराज्य चलायेंगे, गाँव के झगड़े गाँव के बाहर नहीं ले जायेंगे। ३. कपड़ा, तेल आदि रोजमर्रा की चीजें गाँव में ही बनायेंगे, जिससे गाँव के सब हाथ काम में लगें। अगर रोजमर्रा की चीजें बाहर से लानी पड़ती हैं तो वह गुलामी ही है, न कि आजादी।

आजादी के मानी यह नहीं कि कोई पाबन्दी ही न हो। अपनी अपने आप पर पाबन्दी रहना ही सच्ची आजादी है। हम अपने घर में झाड़ू लगाकर सारा कचरा पड़ोसी के घर के सामने फेंक देते हैं तो उसे तकलीफ होती है। लेकिन अगर हम अपने खेत में गड्ढा बनाकर उसमें वह कचरा डालते हैं तो किसी को तकलीफ नहीं होती। आजादी का लक्षण यह नहीं कि जो मन में आये, सो किया जाय। सरकार कानून बनाये और पुलिस के जरिये लोगों से उस पर अमल करवाये, तो वह आजादी नहीं कही जायगी। अगर हम ही अपना कानून बनाते हैं और अपने आप पर उसका अमल करते हैं तो वह आजादी सच्ची आजादी है। यद्यपि आज चोरी के खिलाफ कानून बना है और चोरी करनेवाले को सजा मिलती है, फिर भी हम चोरी नहीं करते तो वह सजा के डर से नहीं, बल्कि इसलिए चोरी नहीं करते कि हम उसे अधर्म मानते हैं। सरकार के दंड के, सजा के भय से हम भलाई से बरतते हैं तो वह आजादी नहीं है। जब लोग किसी अच्छी चीज को स्वयं अच्छा समझ लें और उस पर अमल करें, खराब चीज को खराब समझकर छोड़ दें, तभी आजादी है, ऐसा कहा जायगा।

अच्छा काम करना चाहिए, बुरा काम नहीं करना चाहिए, यह बात बच्चों को सरकार का कानून सिखायेगा या पुलिस समझायेगी ? माता-पिता बच्चों को धर्म की तालीम देंगे। वे ही उन्हें समझायेंगे कि सच्चाई से बरतना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए, किसी को तकलीफ नहीं देनी चाहिए, सब पर प्यार करना चाहिए, सबके साथ अदब और नम्रता से पेश आना चाहिए। इस प्रकार की तालीम माता-पिता अपने बच्चों को देंगे, तभी बच्चे अच्छे बनेंगे। अगर यह तालीम देने की बात हम सरकार पर छोड़ें तो आजादी नहीं रहेगी। क्या बच्चों को मादरी जबान सरकार ने सिखायी ? नहीं ! जैसे माता बच्चे को मादरी जबान सिखाती है, वैसे ही भलाई, बहादुरी, विनय, सत्यनिष्ठा, प्रेम से मिल-जुलकर काम करना आदि बातें सिखायें तो फिर सरकार के कानून की जरूरत नहीं रहेगी। फिर कानून किताब में पड़ा रहेगा, क्योंकि कोई कभी चोरी या झगड़ा नहीं करेगा। अदालत में कोई केस नहीं जायगा। कोर्ट खाली रहेंगे, जेलखाने खाली रहेंगे। जब जेलखाने खाली पड़ेंगे, तब सच्ची आजादी आयेगी।

गाँव की सेवा करें

गाँववालों को हर रोज शाम को इकट्ठा होकर भजन कर गाँव के बारे में भी सोचना चाहिए। किसे क्या दुःख है, किसको क्या कमी है, कहाँ सेवा की जरूरत है, आदि सब देख-समझकर सेवा का इन्तजाम करना चाहिए। गाँव में सबको तंग करनेवाला कोई दुर्जन मनुष्य हो तो ग्रामसभा उसे बुलाये और पूछे कि 'क्यों भाई! तकलीफ क्यों देते हो?' अगर उसने बात नहीं सुनी तो गाँव का मुखिया कहे कि जब तक तुम अच्छी तरह नहीं बरतते, तब तक मैं फाँका करूँगा। इससे दुर्जन का दिल पिघलेगा और वह कहेगा कि अब मैं ऐसा बुरा काम कभी नहीं करूँगा। फिर किसीको दंड देने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। दुर्जन पर प्रेम से जब्त रखकर उसे सज्जन बनाया जा सकता है। खराब चीजों में से अच्छी चीज पैदा हो सकती है। जैसे मनुष्य के मैले से खाद बनती है तो उससे मेवे और फल पैदा होते हैं। अतः समाज में जो बुराइयाँ हैं, उनका इलाज सारे गाँववाले मिलकर सोचें। इस तरह अपने गाँव की देखभाल लोग खुद करें, यही आजादी का लक्षण है।

अच्छाई से आजादी, बुराई से बरबादी

आठ साल से मैं यही प्रेम की बात समझाता हुआ घूम रहा हूँ। प्रेम का लक्षण है 'देना'। 'हाथ दिये कर दान रे, कहत कबीरा सुनो भाई साधो, कंचन निपजत खान रे', जैसे खान में से सोना निकलता है, वैसे ही यह मनुष्य-देह भी सोने की खान है। लेकिन सोने की खान से कचरा अलग करके खालिस सोना लिया जाता है। इसी तरह इस शरीर की भी खराबी अलग कर अच्छाई लेनी चाहिए। भगवान ने हमें हाथ दिये हैं तो उन हाथों से हम अच्छे काम भी कर सकते हैं और बुरे काम भी। हमें चाहिए कि अच्छे काम करें, बुरे नहीं। भगवान ने इन्सान को जबान दी है, वह दूसरे किसी प्राणी को नहीं दी है। उस जबान से हम 'रामनाम' ले सकते हैं, प्रेम और ज्ञान की बातें कर सकते हैं। साथ ही साथ गालियाँ भी दे सकते हैं। भगवान ने हमें जो नियामतें, ताकतें दे रखी हैं, अगर हम उनका अच्छा उपयोग करें तो वह आजादी है और गलत उपयोग करें तो बर्बादी है। आप तय कीजिये कि आप आजादी चाहते हैं या बर्बादी? अगर आजादी चाहते हैं तो आपको अपने आप पर जब्त रखना होगा। अच्छाई से बरतना होगा, बुराई को छोड़ना होगा, एक-दूसरे को बचाना होगा।

प्रार्थना-प्रवचन

बुरे को अच्छा कैसे बनायें?

अगर मैं गलत काम करूँ तो आप मुझे बचायें। आप करें तो आपको मैं बचाऊँ। इस तरह एक-दूसरे को मदद देते चले जायँ। जैसे इन्सान तैरते हुए कभी थक जाता है तो डूबने लगता है, फिर उसे बचाना पड़ता है। इसी तरह कमजोरी के कारण इन्सान कभी गलती कर बैठता है तो उसे हीन या नीच न समझकर उसकी मदद करनी चाहिए। यह ध्यान में रखें कि हरएक में कमजोरी अवश्य होती है, और वह हम में भी है। कोई बीमार पड़ा तो चाहे वह अपनी ही गलती से क्यों न पड़ा हो, हम उसकी सेवा करते ही हैं, उसे सजा नहीं देते। किसी ने मीठे आम ज्यादा खाये और वह बीमार पड़ा तो हम उससे यह नहीं कहते हैं कि तुमने ज्यादे आम खाये, अब तुम ही उसका फल भोगो। बल्कि पहले हम उसकी सेवा में दौड़े जाते हैं। फिर उसे प्रेम से समझाते हैं कि ज्यादा नहीं खाना चाहिए।

किसी ने चोरी की तो आज उसे सजा दी जाती है, लेकिन वह बेचारा बाल-बच्चों को खिलाने के लिए चोरी करता है। न उसे काम मिलता है और न वह बच्चों को भूखों मरते देख ही सकता है, इसलिए मजबूरी से ऐसा काम करता है। उसको हम जेल भेजते हैं तो नतीजा यह होता है कि उसको तो जेल में तीन-तीन बार खाना मिलता है, लेकिन बाहर उसके बाल-बच्चे भूखे मरते हैं। होना तो यह चाहिए कि किसीने अगर चोरी की तो उसे पंचायत में ले जाना चाहिए और चोरी का कारण मालूम होने पर उसे तीन साल की सजा देने के बजाय तीन एकड़ जमीन देनी चाहिए, जिससे वह मेहनत करके अपने बाल-बच्चों को खिला सके। इस तरह हम चोर को अच्छा इन्सान बना सकेंगे। कोई बुरा काम करता है तो उसे बीमारी मानकर उस शख्स की सेवा करते हुए उसे सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। सजा देने से मामला सुधरता नहीं, बल्कि बिगड़ता है।

हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव में ग्रामस्वराज्य बने और गाँव-गाँव की सेवा के लिए शान्ति-सैनिक मिलें। वे जाति, धर्म, पंथ, पक्ष आदि का खयाल नहीं करेंगे, इन्सान की इन्सान के नाते सेवा करेंगे और मौके पर शान्ति कायम रखने के लिए मर मिटेंगे। इस तरह अपने भाइयों के लिए प्रेम से जमीन देनेवाले और प्रेम से उनकी सेवा करनेवाले निकलेंगे तो जम्मू और कश्मीर में राज्य का आदर्श नमूना दीखेगा। ◆◆◆

रामकोट (कश्मीर) ३१-५'-५९

यह 'इत्तहाद' या दिल जोड़ने का ही काम?

बम्बई से आये हुए कए प्रोफेसर भाई ने हमसे पूछा कि भूदान से सभी मसले किस तरह हल होंगे? बात यह है कि समाज में अगर कोई मसला बाकी न रहा तो जिन्दगी में कोई लुत्फ ही नहीं रहेगा। इसलिए कुछ न कुछ मसले बाकी रहने ही चाहिए और वे बाकी रहनेवाले ही हैं। रामचन्द्र आये और एक बड़ा मसला हल करके चले गये। लेकिन बाकी मसले बचे ही रहे। फिर कृष्ण भगवान को अवतार लेना पड़ा। उन्होंने खूब काम किया, तब भी मसले बाकी ही रहे। बुद्ध भगवान आये। उन्होंने चालीस साल तक घूमकर कुछ मसले हल किये, फिर भी मसले बने ही रहे। आखिर गांधीजी आये और कुछ मसले हल करके चले गये। लेकिन तब भी मसले बाकी ही रहे। इसलिए कोई भी ऐसा दावा नहीं कर सकता कि मैं सब मसले हल करके ही रहूँगा। अगर कोई ऐसा दावा करे भी तो समझना चाहिए कि वह दावा शैतानी है, अहंकारमात्र है।

हमने यह कभी नहीं माना कि हम कोई मसला हल करनेवाले हैं। लेकिन समाज की जो हालत है, उसे हम सामने अवश्य रखते हैं। हमने जमीन की बात लोगों के सामने रखी है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि जमीन का मसला ही हम हल करनेवाले हैं। हम यहाँ आये हैं तो क्या यह निश्चित है कि हम कश्मीर की यात्रा पूरी करके पंजाब वापस जायेंगे ही? हर्गिज नहीं। यहाँ से एक राह पंजाब जाती है, दूसरी तिब्बत, तीसरी रूस, चौथी पाकिस्तान और पाँचवी राह सीधी ऊपर जाती है। इसलिए हमारा ही मसला हल हो सकता है। हम क्या मसला हल करेंगे? हमतो लोगों के सामने केवल यह विचार रखते हैं। जो लोग विचार को समझते हैं, वे इस काम में सहयोग देते हैं।

भूदान ही माध्यम क्यों ?

हमने जो काम उठाया है, वह जमीन का नहीं है। जमीन तो एक बहानामात्र है। हमारा काम यह है कि दिल के साथ दिल जुड़ जायँ। एक उर्दू अखबार (पयामे मग्रीक) के संपादक ने लेख लिखा है कि 'विनोबा हिंदू-मुस्लिम-इत्तहाद का सवाल हाथ में लें तो अच्छा होगा।' वह भाई जानते नहीं कि हमने जो सवाल हाथ में लिया है, वह इत्तहाद का ही है। हम चाहते हैं कि दिलों का मेल हो। उसके लिए हमने बहाने के तौर पर जमीन के मसले जैसी एक ऐसी चीज हाथ में ली है, जो बुनियादी है और आज के जमाने की माँग है। अगर हम ऐसा कोई मसला हाथ में लेते और यहाँ आकर सिर्फ कहते जाते कि भाई आपस में मत लड़ो, प्यार से रहो तो ऐसा कहनेवाले तो कई संत हो गये। लोग उनकी बात सुनने के आदी बन गये हैं। हम सिर्फ इतना ही नहीं कहते कि प्यार करो, बल्कि यह भी कहते हैं कि प्यार का सुबूत, निशानी, इलामत भी पेश करो। लोग दान देते हैं तो हमारी बात उनके हृदय में पैठ जाती है, इसका सुबूत मिलता है।

दिलों को जोड़ना ही देश की मुख्य समस्या

हिन्दुस्तान की मुख्य समस्या यही है कि लोगों के दिल जुड़ जायँ। यहाँ अनेक जमातें रहती हैं, अनेक जमातों में अनेक मजहब, पंथ हैं, जिनसे सुन्दर संगीत बनता है। केवल एक ही सूर हो तो संगीत नहीं बनता, संगीत के लिए मुख्तलिफ सूर हों, यह निहायत जरूरी है। लेकिन वे सूर एक-दूसरे के खिलाफ न हों। अनेक मजहबों, अनेक जमातों का होना हिन्दुस्तान का ऐब नहीं, बल्कि वैभव, गुण है। यहाँ पर दुनिया भर से जमातें आयीं। तिलक महाराज ने तो कहा था कि हमारे पूर्वज उत्तर ध्रुव से आये थे। उत्तर में ऋषिदेश है, जिसे आजकल रशिया कहते हैं। यह कश्मीर कश्यप ऋषि का स्थान है। उधर कश्मीर से लेकर जो कश्यप समुद्र (Caspian Sea) है, वहाँ तक कश्यप ऋषि ने पराक्रम किया है, जैसे कि दक्षिण में अगस्त्य ऋषि ने पराक्रम किया। दुनिया भर के लोग यहाँ आये और हमने उन्हें जज्ब कर लिया। कभी-कभी आरम्भ में कुछ कशमकश भी चली, लेकिन हमने प्रेम से सब को हजम कर लिया। यहाँ ईसाई, मुसलमान आदि जो भी आये, उन पर यहाँ की हवा का रंग चढ़ा। उनमें हिन्दुस्तान की सिफत आयी। यहाँ हिन्दू और मुसलमान बड़े प्रेम से रहते थे। परन्तु अंग्रेजों ने यहाँ आकर 'फूट डालो और शासन करो' का रवैया अपनाया, जिससे तमाम राजनैतिक झगड़े पैदा हुए। जहाँ सियासी बातें आती हैं, वहाँ दिमाग के टुकड़े हो जाते हैं।

ये सियासतदाँ !

बहुत से सियासतदाँ लोगों के साथ मेरा परिचय है। मैंने देखा है कि अकसर वे जितने बुद्धू होते हैं, उतने दूसरे नहीं। उनका नजरिया तंग होता है और वे उसी दायरे में सोचते हैं। अपनी-अपनी पार्टी बन गयी तो बस, वे उतने के ही लिए सोचते हैं। कोई हिन्दुओं की सोचते हैं तो कोई मुसलमानों की। कोई मध्य-युगीन ही बातें करते हैं कि यहाँ तो हमारा राज्य था। उनका दिमाग भरा हुआ रहता है, खाली नहीं। इसीलिए उनके दिमाग की नये विचार को कबूल करने की तैयारी नहीं रहती। जैसे बच्चा कोई हठ पकड़ लेता है तो उसे छोड़ता नहीं, वैसी ही हालत इन सियासतदाँ लोगों की भी होती है।

कहा जाता है कि वे अक्लवाले होते हैं, लेकिन उनकी अक्ल बहुत ही सीमित होती है। जब तक अंग्रेजों ने यहाँ आकर फूट नहीं डाली थी, तब तक यहाँ हिंदू-मुसलमान इतने प्यार से रहते थे कि एक-दूसरे को चाचा-चाचा कहते थे। एक दूसरे के त्योहारों में हिस्सा लेते थे। हमने बचपन में देखा था कि मुहर्रम, दीवाली जैसे त्यौहारों में दोनों हिस्सा लेते थे। भाई-भाई जैसे रहते थे। उनके नाम भी मिले-जुले होते थे। इसका कारण यही है कि मुसलमान यहाँ हजार साल से रहते थे। जब वे आये, तब कुछ कशमकश हुई, लेकिन फिर नानक, कबीर जैसे आये और उन्होंने धर्म का विचार सबके सामने रखा। 'ना मंदिर में, ना मस्जिद में, ना काबे में।'—वह तो घर-घर है, ऐसा विचार उन्होंने लोगों को समझाया। नामदेव ने कहा कि हिंदू उसकी पूजा मंदिर में करते हैं और मुसलमान मस्जिद में। लेकिन खुद उसने उसकी पूजा की है, जो घर-घर में रहता है। ऐसा ही अन्य संतों ने भी समझाया। फिर हिंदू और मुसलमानों की कारीगरी, दस्तकारी आदि सब मिली-जुली बन गयी। हिंदू-मंदिरों की बनावट में मुस्लिम बनावट आ गयी। सूफियों ने भी एकता पैदा की।

देश की विशेषता : मिला-जुला समाज

इन्द्रधनुष्य के समान हिंदुस्तान में अनेक रंग हैं और वे एक-दूसरे से इस तरह मिले हैं कि पता ही नहीं कि एक कहाँ खत्म होता है और दूसरा कहाँ से शुरू होता है। इस तरह हिंदुस्तान एक खूबसूरत नज्जारा बन गया है। कवि ने जो कहा है कि 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा' इसमें कुछ सार है। वैसे तो हर देशवाले कहते हैं कि हमारा देश अच्छा है, क्योंकि वह हमारा है। दूसरे देशों में भी खूबसूरत कुदरत है। फिर भी कवि की इस पंक्ति में सार है, क्योंकि हिंदुस्तान में जो समाज बना है, वह मिला-जुला है। इतना मिला-जुला समाज दुनिया के दूसरे देशों में नहीं है। न वह चीन में है, न रूस में और न अमेरिका में ही। पूरे यूरोप का जब एक राष्ट्र बनेगा, तब वह हिंदुस्तान की बराबरी कर सकेगा।

हमारे सहायक उत्पादन

मतलब यह कि हमने जो काम उठाया है, वह सबके दिलों को जोड़ने का काम है। बड़े कारखाने में एक मुख्य चीज के साथ सहायक उत्पादन (Bye-Products) भी होते हैं। वैसे ही हमने भूदान की बात शुरू की तो उसके साथ खादी, ग्रामोद्योग जोड़ दिया। फिर कहा कि तालीम पर सरकार का अंकुश न हो, लोग तालीम अपने हाथ में लें। फिर कहा कि शान्ति-सेना बनाओ, जिससे पुलिस-सेना की जरूरत न पड़े। फिर कहा कि जमीन की, कारखानों की मालकियत मिटा दो। अब कह रहा हूँ कि आप हर घर में सर्वोदय पात्र रखिये।

हम हर साल सर्वोदय-संमेलन किसी तीर्थस्थान में करते थे तो कइयों ने उस पर आक्षेप उठाया। लेकिन वे समझते नहीं थे कि मैं हर साल तीर्थस्थान के मन्दिरों के दरवाजे खटखटाता रहा। आखिर पंढरपुर में दरवाजा खुल ही गया और हमारे सब धर्मवाले, सब जातिवाले साथियों के साथ हमें वहाँ प्रवेश मिला। इससे हिन्दूधर्म का काया-पलट हो गया। यह हमारे कारखाने का 'बाइ प्रोडक्ट' है। इसके लिए हमें ज्यादा काम नहीं करना पड़ा। सिर्फ साल में एक दफा दरवाजा खटखटाना पड़ा। ग्रामदान में गाँव का परिवार बनता है तो जातिभेद, धर्मभेद, छुआछूत आदि सभी भेद खत्म हो जाते हैं। इसलिए हमारे काम से जमीन का मसला हल होगा या नहीं, यह तो भगवान ही जाने, लेकिन दिल अवश्य जुट जायेंगे। मजदूर और मालिक, देहातवाले और शहरवाले, हिन्दू और मुसलमान, हरिजन-परिजन सबके दिल जुट जायेंगे।

बहनें आगे आयें

हमारा काम दिल जोड़ने का है, उस निगाह से उसकी तरफ देखा जाय तो बहनें कहेंगी कि यह तो हमारा ही काम है। हम चाहते हैं कि शान्ति-सेना में बहनें आगे आयें तो फिर झगड़े टिक ही न सकेंगे। यहाँ पर कृष्णा बहन (कृष्णा मेहता, सदस्य लोकसभा) सबको विचार समझाती हैं तो बहनें भी बड़ी तादाद में शान्ति-सेना में नाम दे रही हैं। इसमें कोई शक नहीं कि कोई खींचनेवाला हो तो मनुष्य खींचे जाते हैं। यहाँ की बहनें कृष्णा बहन को देखती हैं तो उन्हें इत्मीनान होता है कि इनके पीछे जाने में कोई खतरा नहीं है। कृष्णा बहन ने एक किताब लिखी है 'कश्मीर पर हमला'। उससे पता चलता है कि उनके हाथ से भगवान ने क्या-क्या काम कराये। पर वे महसूस ही नहीं करती कि उन्होंने कुछ किया। बल्कि यही सोचती हैं कि भगवान ने ही सब कुछ कराया है। इस तरह बहनें विश्वास के साथ आगे आयें तो बहुत काम होगा। मैं आशा करता हूँ कि कश्मीर का मसला बहनें ही हल करेंगी।

ये सोने की बेड़ियाँ निकाल फेंकें

आज हालत ऐसी है कि भाइयों ने बहनों के हाथपाँव में सोने की बेड़ियाँ डाल रखी हैं, जिसे वे 'अलंकार' समझती हैं। इसका नतीजा यह होता है कि बहनें हिम्मत के साथ बाहर जा नहीं सकतीं और रक्षा के लिए भाइयों की जरूरत महसूस करती हैं। क्या आपने कभी यह देखा है कि जंगल में शेरनी के बचाव के लिए शेर आता है? बल्कि शिकारी तो अपने अनुभव यों सुनाते हैं कि शेरनी के बच्चे को पकड़ लिया जाय तो शेर तो बंदूक देखकर भाग जाता है, लेकिन शेरनी अपने बच्चे को छुड़ाने के लिए बार-बार हमला करती है। वह तब तक नहीं हटती, जब तक उसे खत्म नहीं कर दिया जाता या उसका बच्चा उसके सुपुर्द नहीं किया जाता। फिर मनुष्य-जाति में ही स्त्री की रक्षा के लिए पुरुष की जरूरत क्यों? पुरुषों ने स्त्रियों को गहने पहनाकर बैंक बना दिया है, इसलिए उनकी रक्षा करनी पड़ती है। वे माल बनी हैं, इसलिए माल के साथ मालिक की भी जरूरत होती ही है। गहनों ने बहनों को डरपोक बनाया है। इसलिए ये सारी बेड़ियाँ फेंक दें तो आप में हिम्मत आयेगी। बहनों में पुरुषों की अपेक्षा क्या कमी है? यही कमी है कि उनमें उद्दंडता कम है, वे एकदम कोई काम नहीं करतीं। पर यह तो अच्छी ही बात है। इसलिए बहनों को दिल जोड़ने का काम उठा लेना चाहिए।

बहनें लोक-सेवक-संघ बनायें

इन दिनों एक नयी बला आयी है। सारे पुरुष पार्टियों में फँसे हैं। अगर कुश्ती के जैसी चुनाव खेलने की बात होती तो ठीक होता। होना तो यह चाहिए कि दो भाई प्रेम से एक ही घर में रहें, प्रेम से खायें-पीयें। दोनों के सियासी विचार अलग-अलग हैं, इसलिए दोनों जनता में जाकर अपना-अपना विचार समझाकर वोट माँगें। चुनाव में एक हार जाय और दूसरा जीते, तो भी दोनों प्रेम से साथ रहें। यह होगा, तब तो हिंदुस्तान की चीज बनेगी। नहीं तो आज पश्चिम से चुनाव लड़ने की जो बात आयी है, उसके कारण गाँव-गाँव में आग लग जाती है। अतः अब बहनों को लोक-सेवक-संघ बनाने के लिए आगे आना चाहिए और पुरुषों से कहना चाहिए कि तुम जानो अपने झगड़े, हम उसमें नहीं पड़तीं। हम दिल जोड़ने का काम करेंगी। मैं कहता हूँ कि जितने पुरुष हैं, वे अलग-अलग पार्टियों में बँटें और जितनी स्त्रियाँ हैं, वे कुल की कुल हमारे पास आयें तो फिर देखें कि हिंदुस्तान का नक्शा कैसा बनता है!

भारतीय नारी का आदर्श

एक जमाना था, जब हिंदुस्तान में बड़े-बड़े ज्ञानियों को तालीम पाने के लिए बहनों के पास भेजा जाता था। जनक महाराज बड़े ज्ञानी थे, लेकिन उन्हें आत्मज्ञान के लिए सुलभा के पास जाना पड़ा था। महाभारत में सुलभा-जनक-संवाद मशहूर है। प्राचीन काल में इस तरह बहनें ज्ञानी बनी थीं। लेकिन बीच के जमाने में वे घर में फँस गयीं, भोग का साधन बन गयीं। पुरुषों ने उन्हें गहने पहनाकर कैदी बना लिया। यह केवल हिंदुस्तान में ही नहीं हुआ, यूरोप में भी यही हालत हुई। इंग्लैंड की बहनों को तो वोट का सक हासिल करने के लिए काफी आंदोलन करना पड़ा। वहाँ की बहनों ने पार्लमेंट में जाकर अंडे फेंके थे। लेकिन हमारे यहाँ बहनों को वोट का हक हासिल करने के लिए कुछ भी करना नहीं पड़ा। हमने कभी यह माना ही नहीं कि बहनों में कुछ कमी है, जिनके कारण उन्हें वोट का हक नहीं दिया जा सकता। हमारे यहाँ तो यज्ञ आदि धर्म-कार्य पति-पत्नी को साथ-साथ करने पड़ते थे। हमने दोनों के समान अधिकार माने हैं। हमें अब फिर से बहनों की ताकत जगानी है, इसलिए कि हमें हारे भारत के दिलों को और उसके जरिये सारी दुनिया के दिलों को एक बनाने का काम करना है।

कुल मानव-समाज एक करना है

हम 'जय जगत्' कहते हैं। यह कोई आज की बात नहीं है। एक साल पहले आजाद-हिंद-सेना के एक भाई मुझसे मिलने आये थे। उन्होंने 'जय हिंद' कहा, तो मैंने जवाब में कह दिया 'जय हिंद, जय दुनिया, जय हरि।' यूरोप के लोगों को ताज्जुब होता है और खुशी भी होती है कि हिंदुस्तान में बच्चा-बच्चा कहता है कि 'सारी दुनिया की जय हो'। क्या दुनिया के दूसरे किसी देश में यह चलता है? वहाँ तो हर कोई अपने-अपने देश की जय बोलता है। सिर्फ हिंदुस्तान का काम करने से हमारा काम पूरा नहीं होगा, बल्कि हमें कुल मानव-समाज को एक करना है।

कुरान में कहा है—'उम्मतुम् वाहिद' यानी तुम सब एक जमात हो। इसी मकसद के लिए भूदान एक बहाना बन गया है। इस तरह की किसी बाहरी चीज के बिना अंदरूनी चीज दिल में पैठती नहीं। आपके दिल को प्रसन्न करने के लिए हम फूल, फल जैसी कोई बाहरी चीज देते हैं तो प्रेम की पहचान हो जाती है। छह लाख लोगों ने दान दिया तो मैं जान गया कि उन्होंने हमारा प्रेम का संदेश कबूल किया। नहीं तो मैं कैसे जानता? बड़ी खुशी की बात है कि जम्मू-कश्मीर में भी लोग प्रेम से दान दे रहे हैं और शांति-सेना में नाम दे रहे हैं। ◆◆◆

अनुक्रम

१. ग्राम-स्वराज्य से ही जम्मू-कश्मीर आदर्श राज्य बनेगा
बिलावर २८ मई ५९ पृष्ठ ४९७
२. यह 'इत्तहाद' या दिल जोड़ने का ही काम?
रामकोट ३१ मई '५९ ,, ४९८

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।